हिन्दी - विभाग

डा० कविता कुमारी सिंह

B.A, Part III

विषय — भाषा की उत्पत्ति का सिद्धान्त

① दैवी उत्पत्ति का सिद्धान्त :— ईश्वरवादी प्रत्येक कार्य - कलाप का यहाँ तक की सृष्टि का भी संबंध सूत्र किसी दिव्य शक्ति से जोड़ते हैं अतः भाषा की उत्पत्ति को भी लेकर उन्हें कोई उलझन नहीं है। जब ईश्वर मनुष्य को उत्पन्न कर सकता है तो भाषा को भी उत्प किया होगा। मनुष्य जब भी उत्पन्न हुआ है तो अपनी सम्पूर्ण विशेषताओं के साथ। उसमें अन्य प्राणियों की अपेक्षा शारीरिक सौष्ठव आंशिक स्वच्छन्दता और विकसित चेतना साथ मानसिक क्षमता भी आयी होगी तो आश्चर्य? प्रत्येक धर्म के अनुयायी न अपने धर्म को, बल्कि अपने धर्मग्रन्थ भी सर्वश्रेष्ठ माना है और उसी से मा

आविर्भाव भी मानता है। हिन्दू संस्कृति को
देववाणी कहकर सारी भाषाओं की जननी
घोषित करते हैं। ऋग्वेद का एक मंत्र है:—

" देवीं वाचमजनयन्त देवाः
तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।"

वाग्देवी को देवों ने उत्पन्न कि-
और उसे विश्व के सभी प्राणी बोलते हैं।

भारतीय पंडित संस्कृत को, जैन औ
बौद्ध अर्द्धमागधी और पाली को, ईसाई वि
हिब्रु तथा मुसलमान कुरान की भाषा अ-
को आदि भाषा के रूप में स्वीकार करते
इस संबंध में 'डॉ० ओमप्रकाश शिवराज' ने
अपनी पुस्तक भाषा और मनुष्य में अपनी
को मूलतः इसी पर केन्द्रित करते हुए लि
—" भाषा मनुष्य सृष्टि के साथ-साथ एक
दैवी शक्ति द्वारा उत्पन्न हो गई।"

किन्तु इस सिद्धान्त को लेकर
आपत्ति प्रकट की गई है —

1) यदि वह ईश्वर प्रदत्त है तो विभिन्न
में इतना भेद क्यों है? अन्य

की भाषा तो संसार में एक ही है। सभी देशों में कुत्ते एक सा भूंकते हैं, घोड़े एक समान ही हिनहिनाते हैं, फिर यह एकरूपता मनुष्य की बोली में क्यों नहीं? इस शंका का समाधान यह सिद्धान्त नहीं कर पाता है। बात यह है कि आस्तिकता के पीछे श्रद्धा काम करती है और वैज्ञानिकता के पीछे तर्क। यदि भाषा ईश्वर-प्रदत्त होती तो कदाचित् प्रारम्भ से ही वह विकसित होती किन्तु इतिहास में इसके ~~उल~~ उलटे प्रमाण मिलते हैं। भाषा में विकास परिवर्तन और परिवर्द्धन दिखाई देता है। अतः स्पष्ट है कि भाषा ईश्वर प्रदत्त नहीं है।

(2) संकेत सिद्धान्त — कुछ विद्वानों का मत है कि आरम्भ में मनुष्य भी पशुओं के समान आँख, हाथ, पैर आदि अंगों को चलाकर अभिप्राय व्यक्त किया करता था, किन्तु जब उसका अभिप्राय पूर्णतः व्यक्त नहीं हो पाता था, उस असुविधा को दूर करने की भावना

प्रेरित होकर मनुष्य ने पारस्परिक, विचार विनिम[य]
द्वारा ध्वन्यात्मक भाषा को जन्म दिया। इस
सिद्धान्त के प्रवर्तक फ्रेंच विचारक रूसों का
लिया जाता है।

यह सिद्धान्त मान लेता है कि
समय ऐसा था, जब मनुष्य को भाषा न[हीं]
थी, तो उसकी आवश्यकता का अनुभव हुई
होगा? जब हजारों या लाखों की संख्या
विभिन्न मनुष्य इकट्ठा हुए होंगे तो ऐसा
प्रश्न पर तर्क-वितर्क करने का कोई माध्यम
चाहिए। न जाने कितनी बार उसका स्वप्न
हुआ। इस तरह के अनेक शंकाओं
समाधान इस सिद्धान्त से नहीं हो